Speech of Hon'ble Mr. Justice Vijender Jain, Chief Justice, Punjab and Haryana High Court & Patron-in-Chief, Haryana State Legal Services Authority on the occasion of Seminar on 'Eradication of Female Foeticide' and 'Women Empowerment' held at Courts Complex, Hansi on 6.3.2008.

मेरे लिए आज एक हर्ष का और एक फक्र का विषय है कि हांसी जिसमें मेरा बचपन मेरी मां के साथ बीता वहां आपके बीच में मुख्य न्यायाधीश की हैसियत से आया हूँ। कोई ऐसा वर्ष नहीं होता था जब मैं स्कूल में पढ़ता था अपनी माताजी के साथ गर्मी की छुट्टियों में हांसी में नहीं आया। आज मेरा हांसी में करीब शायद बीस साल के बाद आगमन हो रहा है। मैं आज अगर यहां एक चीफ जस्टिस की हैसियत से खड़ा हूँ तो इसका बहुत बड़ा श्रेय हांसी को जाता है। मैं जब छोटा बच्चा था और गर्मी की छुट्टियों में अपने नाना के यहां आता था तो बाबू शांति कुमार जैन, Advocate यहां पर जो उनकी हवेली है वो land revenue law के बड़े अच्छे जाने माने वकील होते थे। आस पड़ोस के, जिलों से उनके पास लोग आते थे। उस जमाने की एक परीपाटी थी जो लोग कहीं दूर-दूर से आते थे वो रात को वहीं सोते थे, उनके खाने का इंतजाम किया जाता था, मुंशी जी को हिदायत होती थी कि इनको कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। एक भीड़ लगी रहती थी और हमारे नाना जी जब नीचे आते थे, उनसे बात करने के बाद तो मुंशी जी रात को आते थे तो उनको बताते थे साहब कि इतने पैसे इसने दे दिए, इतने पैसे इसने दे दिए, तो वो कहते थे अच्छा इसको रख लो मैं सुबह देख लूंगा। मैं बहुत छोटा था। मुझे लगा कि ये काम सबसे अच्छा है कि इतने लोग पैसे लेकर के लाइन में लगे हुए हैं और वो कह रहे हैं कि मैं अभी नहीं देखता, अभी सुबह देखूँगा। तो मेरे मन की इच्छा हुई कि मैं भी वकील बनूं। इससे अच्छा दूसरा काम कोई नहीं। तो वकील

बनने के लिए हांसी मेरी प्रेरणा का स्त्रोत रहा। मेरे परिवार में मेरे पिताजी, मेरे दादाजी वो सब लोग उनका संबंध व्यापार से था। बड़े व्यापारी थे। जब मैंने अपने पिताजी को कहा कि मैं वकील बनना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी सात पीढ़ियों में तो कोई वकील है नहीं, तुम वकील बनकर के क्या करोगे? तो मैंने कहा नहीं मेरी सात पीढ़ियों में आप मत कहिए मेरे नानाजी वकील हैं तो मैं आपके रास्ते पे नहीं जाता नानाजी के रास्ते पे जाता हूँ। तो उस हांसी के साथ जब मैं आज यहां आया तो मुझे अपने बचपन की यादें सब ताज़ा हो गई।

पिछले पचास सालों के अंदर हांसी बिल्कुल बदल गया है और मैं चाहता हूँ कि हांसी और बहुत तरक्की करेगा क्योंकि हांसी के लोग बड़े उद्यमी हैं, बहुत मेहनती हैं और ठीक कहा आहूजा जी ने कि मैं भूलता नहीं हूँ। मैं जब यहां आता था अगर मेरी उम्र से, मैं अगर आठ बरस का था तो यहां कोई बच्चा छह बरस का भी होता था तो मेरी मां मुझे कहती थी ये तुम्हारे मामा लगते हैं। तो मैं आपको सबको हांसी के जो लोग बैठे हैं उसी रूप में देखता हूँ। मेरा सौभाग्य है कि मुझे पंजाब और हरियाणा के चीफ जस्टिस की हैसियत से न्यायपालिका के चीफ जस्टिस का काम करने का मौका मिला।

मैं जब यहां पर आया तो दो बातें मैंने देखी कि जहां तक हरियाणा का ताल्लुक है आपके मुख्यमंत्री बहुत संवेदनशील हैं। एक वकील होने के नाते उनको मालूम है कि न्यायपालिका के लिए क्या-क्या मुसीबत होती है, कहां-कहां Court Complex की कमियां हैं, कैसे-कैसे Judicial Officers की संख्या अगर हम नहीं बढ़ाएंगे तो मुकदमें जल्दी से निपटारे कैसे होंगे। अगर केस का निपटारा जल्दी नहीं होगा तो समाज में न्याय प्रणाली के प्रति लोगों की आस्था कम होगी। न्याय प्रणाली के अंदर अगर

लोगों की आस्था कम होती है तो उसे प्रजातंत्र के अंदर एक जो ढांचा है एक जो स्तम्भ है प्रजातंत्र का judiciary अगर उससे ऊपर लोगों की आस्था कम होती है तो उस देश के अंदर, प्रजातंत्र के अंदर भी आस्था कम होगी। इसी कारण से माननीय मुख्यमंत्री जी ने हमारे न्यायिक परिसर के लिए, हमारे judicial officers के लिए, उनकी संख्या के लिए बढ़ाने से भी संकोच नहीं किया। मुझे अफसोस हुआ कि हरियाणा जिसकी मां की कोख से मैंने जन्म लिया वो हरियाणा और पंजाब भ्रूण हत्या के मामले में सबसे ऊपर हैं, सारे हरियाणा और पंजाब में लड़कियों को मारने में नम्बर एक हैं, तो मेरी शर्म से गर्दन झुक गई और मैंने उसी समय संकल्प लिया भ्रूण हत्या के विरोध में मुझे एक जनचेतना अभियान चलाना है। कानून में भी सजा देने में हम सक्षम हैं। पर मैंने देखा कि कानून से कार्य नहीं चलेगा क्योंकि कानून में आपको गवाही चाहिए। मां जो अपना भ्रूण हत्या करवा रही है उसका पति, डाक्टर, सास-ससुर सब उस हत्या के अंदर मिले हुए हैं तो गवाही कहां से आएगी और अगर गवाही नहीं होगी तो मैं, मेरे जज साहिबान, मेरे Sessions Judge, मेरे दूसरे जज कैसे दोषी को सजा देंगे। तब हमने सोचा कि हमको ये सवाल आप सब लोगों से पूछना है। हमको पूछना है कि रोजाना हम जब सीता-राम जपते हैं, राधे-कृष्ण बोलते हैं, दुर्गा, भवानी, सरस्वती, लक्ष्मी उसकी पूजा करते हैं और जो उसका प्रतीक है उस छोटी नन्हीं-मुन्नी बच्ची को हम कैसे मार सकते हैं? उस बच्ची जो अपनी मां की कोख के अंदर पूछती है कि मां कम से कम मुझे बाहर तो आने का मौका दों। मेरी भी छोटी-छोटी उंगलियां हैं, मेरे छोटे-छोटे हाथ हैं, मेरी आंख भी बन गई है। ये डाक्टर बेरहमी से मुझे काट देगा। मैं आपसे कुछ नहीं मागूंगी आने के बाद। फिर भी उसको अगर गर्भ के अंदर मार दिया जाता है तो इसके लिए हमको आपके साथ शामिल होकर एक जन चेतना

अभियान छेड़ना पड़ा। एक जन आंदोलन को यज्ञ के रूप के अंदर तबदील करना पड़ेगा और आप तमाम लोगों को उस यज्ञ के अंदर आहूति देनी होगी। आहूति देनी होगी ये संकल्प करके कि हम हरियाणा के माथे के ऊपर लगा हुआ जो कलंक है उसको मिटाएंगे। हिसार और हांसी के ऊपर लगा हुआ जो कलंक है उसको मिटाएंगे और हम इसमें शामिल होकर के भ्रूण हत्या को आगे से नहीं होने देंगे। जब तक ये जनमानस, जब तक ये जन चेतना आप और हमारे बच्चों के बीच में, हमारे बुजुर्गों के बीच में हमारे जो यहां पर पढ़े लिखे लोग हैं, वकील साहिबान हैं, डाक्टर साहिबान हैं उनके बीच में नहीं आयेगी तो भ्रूण हत्या समाप्त नहीं हो सकती। भ्रूण हत्या एक सामंतवादी समाज की सोच है। नारी सशक्तिकरण नहीं हो सकता जब तक भ्रूण हत्या खत्म नहीं होगी और भ्रूण हत्या खत्म नहीं हो सकती जब तक आप दहेज प्रथा बंद नहीं करेंगे। भ्रूण हत्या खत्म नहीं हो सकती जब तक नारी को ठीक तरह से security समाज के अंदर नहीं मिलेगी। इसलिए आइये मैं आपको हांसी के निवासी होने की हैसियत से आप सबको एक अपील करता हूँ कि हमारे इस यज्ञ के अंदर हमारे इस जन चेतना अभियान के अंदर आप सब लोग मिलकर के एक स्वयं सेवक की तरह से कार्य करें और भ्रूण हत्या जैसे घिनौने कार्य को समाप्त करें।

बहुत-बहुत धन्यवाद।